के किस आयाम में परिवर्तन आता है, जैसे– राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक इत्यादि।

(ii) सामाजिक परिवर्तन के वर्गीकरण का दूसरा आधार यह भी हो सकता है कि बृहत् पैमाने पर सामाजिक परिवर्तन होने की पूर्वावस्था क्या थी। यह इसलिए महत्वपूर्ण है कि उद्योगीकरण के द्वारा विभिन्न समाजों में विभिन्न प्रकार का परिवर्तन आता है। उद्योगीकरण के द्वारा जो परिवर्तन भारतीय और चीनी समाज में आया है, वह परिवर्तन अफ्रीका की आदिम जातियों में नहीं आया है। उद्योगीकरण के चलते सामाजिक परिवर्तन की रफ्तार कहीं धीमी तो कहीं तेज होगी। इसके अलावा सामाजिक परिवर्तन का स्वरूप भी अलग-अलग होगा।

(iii) परिवर्तन की गति के आधार पर भी सामाजिक परिवर्तन का वर्गीकरण किया जा सकता है। सामाजिक परिवर्तन की गति कभी तेज और कभी धीमी देखने को मिलती है। यदि सामाजिक परिवर्तन का आधार कोई जन आन्दोलन या क्रांति है तो सिर्फ परिवर्तन की गति ही तेज न होगी बल्कि उसका स्वरूप भी बुनियादी होगा।

(iv) अंत में उन्होंने बताया है कि वर्गीकरण का आधार यह भी हो सकता है कि परिवर्तन योजनाबद्ध है या आकस्मिक। योजनाबद्ध परिवर्तन (Planned Change) का स्वरूप आकस्मिक परिवर्तन (Fortuitous Change) से भिन्न होता है। आज समाज में अधिकांश परिवर्तन योजनाबद्ध तरीके से आ रहे हैं जबकि आदिकाल में सभी परिवर्तन आकस्मिक हुआ करते थे। आकस्मिक परिवर्तन की गति योजनाबद्ध परिवर्तन की तुलना में साधारणतया धीमी होती है।

## सामाजिक परिवर्तन के कारक (Factors of Social Change)

सामाजिक परिवर्तन के अनगिनत कारक हैं। कारकों की प्रमुखता देश और काल से प्रभावित होती है। जिन कारणों से आज सामाजिक परिवर्तन हो रहे हैं, उनमें से बहुत कारक प्राचीन काल में मौजूद नहीं थे। परिवर्तन के जिन कारकों की महत्ता प्राचीन एवं मध्य काल में रही है, आज उसकी महत्ता उतनी नहीं रह गयी है। समय के साथ परिवर्तन का स्वरूप और कारक दोनों बदलते रहते हैं। एच० एम० जॉनसन (1960: 633) ने परिवर्तन के स्रोतों को ध्यान में रखकर परिवर्तन के सभी कारणों को मुख्य रूप से तीन भागों में रखा है।

(i) **आन्तरिक कारक (Internal Factors)**– सामाजिक परिवर्तन कभी-कभी आन्तरिक कारणों से भी होता है। व्यवस्था का विरोध आन्तरिक विरोध (Internal Contradictions) से भी होता है। जब लोग किसी कारणवश अपनी परम्परागत व्यवस्था से खुश नहीं होते हैं तो उसमें फेरबदल करने की कोशिश करते रहते हैं। आमतौर पर एक बन्द समाज में परिवर्तन का मुख्य स्रोत अंतर्जात (Endogenous/Orthogenetic) कारक ही हुआ करता है। धर्म सुधार आन्दोलन से जो हिन्दू समाज में परिवर्तन आया है, वह अंतर्जात कारक का एक उदाहरण है।

(ii) **बाह्य कारक (External Factors)**– जब दो प्रकार की सामाजिक व्यवस्था, प्रतिमान एवं मूल्य एक-दूसरे से मिलते हैं तो सामाजिक परिवर्तन की स्थिति का

Scanned with CamScanner

निर्माण होता है। पश्चिमीकरण या पाश्चात्य प्रौद्योगिकी के द्वारा जो भारतीय समाज में परिवर्तन आया है, उसे इसी श्रेणी में रखा जाएगा। साधारणतः आधुनिक युग में परिवर्तन के आन्तरिक स्रोतों की तुलना में बहिर्जात (Exogenous/Heterogenetic) कारकों की प्रधानता होती है।

**(iii) गैरसामाजिक वातावरण (Non-social Environment)**– सामाजिक परिवर्तन का स्रोत हमेशा सामाजिक कारण ही नहीं होता। कभी-कभी भौगोलिक या भौतिक स्थितियों में परिवर्तन से भी सामाजिक परिवर्तन उत्पन्न होता है। आदिम एवं पुरातनकाल में जो समाज में परिवर्तन हुए हैं, उन परिवर्तनों से गैरसामाजिक कारकों की बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

ऐन्थनी गिडेन्स (1993) ने परिवर्तन के कारकों का विश्लेषण कुछ दूसरे ढंग से किया है। उन्होंने सभी कारकों को तीन भागों में वर्गीकरण कर देखा है। उनके वर्गीकरण का आधार जॉनसन से अलग है। उन्होंने परिवर्तन के कारकों के स्रोत को न देखकर उसके स्वरूप को ध्यान में रखकर तीन भागों में विभाजन किया है। वे हैं– भौतिक वातावरण (Physical Environment), राजनीतिक व्यवस्था (Political Organization) एवं संस्कृति (Culture) जिसकी चर्चा कुछ विस्तार से नीचे की जा रही है। मकीवर एवं पेज ने भी सामाजिक परिवर्तन का तीन ही प्रमुख कारक माना है, पर वह थोड़ा भिन्न है, जैसे– प्रौद्योगिक (Technological), जैविक (Biological) एवं सांस्कृतिक (Cultural)। उनका यह वर्गीकरण अब काफी पुराना पड़ चुका है। यहां हम गिडेन्स के द्वारा दिये गये कारकों की चर्चा करेंगे, जो सबसे ज्यादा नवीनतम हैं।

**(1) भौतिक वातावरण (Physical Environment)**– समाज के प्रारंभिक विकास की अवस्था में भौतिक वातावरण का प्रभाव बहुत ही ज्यादा रहा है। जैसे– ऑस्ट्रेलिया में आदिम जाति के लोगों को कन्द मूल, फल (Edible Roots and Fruits) आसानी से उपलब्ध नहीं था, इसलिए वहाँ के आदिवासियों को स्वभावतः शिकारी बनना पड़ा। दूसरी तरफ, सिन्धु घाटी सभ्यता (Indus Valley Civilization) में सिंचाई और खेती के साधन उपलब्ध थे, इसलिए वहाँ का समाज खेती और पशुपालन से जीविकोपार्जन करता रहा। आदिकाल में किसी समाज का शिकारी होना या किसी का खेती या पशुपालन पर निर्भर करना इस बात पर निर्भर करता था कि वे किस भौतिक परिस्थिति में जी रहे हैं। विश्व की महान् सभ्यता और संस्कृतियों का नदी-घाटी में विकसित होना भी इसी बात का प्रमाण है कि भौतिक सुख-सुविधाओं की सामाजिक निर्माण और विकास में एक अहम भूमिका होती है। मॉर्गन, मार्क्स आदि विचारकों ने यह प्रमाणित करने की कोशिश की है कि सभ्यता और संस्कृति के विकास में भौतिक कारकों की अहम भूमिका होती है।

आधुनिक समाज में भी प्रौद्योगिकी जैसे भौतिक कारकों की सामाजिक परिवर्तन में स्पष्ट भूमिका दिखाई पड़ती है। आधुनिक सामाजिक संरचना के स्वरूप पर यदि आज सबसे अधिक किसी का प्रभाव है तो वह है प्रौद्योगिक अनुसंधान का। बड़े-बड़े उद्योगों के विकास से बहुमात्र-उत्पादन (Mass Production) में वृद्धि हुई, महानगरों का उदय हुआ,

Scanned with CamScanner

लोगों के प्रवास की प्रवृत्ति में वृद्धि हुई। संचार एवं यातायात के साधनों के विकास ने विश्व समाज का आकार छोटा कर दिया है। आज रोज कुछ-न-कुछ नयी-नयी चीजें देखने को मिलती हैं, जिससे वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवन पर सीधा प्रभाव पड़ता है। आगबर्न ने बताया है कि अकेला रेडियो ने विश्व में लगभग 150 प्रकार के परिवर्तनों को लाया है।

ज्ञान और विज्ञान में वृद्धि के चलते भी भौतिक और सामाजिक वातावरण में युगान्तकारी परिवर्तन आए हैं। आज विकसित और विकासशील देशों के बीच बहुत बड़ा फर्क दिखाई पड़ता है। इस फर्क का बहुत बड़ा आधार प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल है। उसी तरह से आदिम काल, प्राचीन काल और आधुनिक काल के बीच भी जो फर्क है उसका आधार प्रौद्योगिकी है। प्राचीन समय में भौतिक वातावरण का मुख्य आधार प्राकृतिक वातावरण (Man-made Environment) से है। मानव समाज ने परिवर्तन की एक लम्बी दूरी तय की है, जिसका मुख्य कारण यह है कि मानव समाज प्रकृतिप्रदत्त वातावरण से मानव-निर्मित वातावरण की ओर बढ़ा है। पूँजीवाद के विकास में निस्संदेह इस प्रौद्योगिकी की भूमिका अहम रही है।

यातायात एवं जनसंचार के माध्यमों में क्रांतिकारी परिवर्तन ने भी हमारे भौतिक पर्यावरण में काफी बदलाव ला दिया है। इसका मुख्य श्रेय समाज में निरंतर प्रौद्योगिक परिवर्तन (Technological Change) को है। इससे समय एवं दूरी पर मानव ने अपना नियंत्रण बना लिया है। फलस्वरूप भिन्न-भिन्न संस्कृतियों के बीच आदान-प्रदान की प्रक्रिया बढ़ी है।

प्रौद्योगिक विकास ने समाज में उद्योगीकरण की प्रक्रिया को बढ़ाया है। उत्पादन के साधनों में निरंतर विस्तार हो रहा है। इससे एक नयी सामाजिक संरचना एवं व्यवस्था का निर्माण हो रहा है। हमारे जीवन के मूल्यों, आदर्शों एवं व्यवहार के प्रतिमानों में क्रांतिकारी परिवर्तन आए हैं। आज संयुक्त परिवार की जगह एकाकी परिवार (Nuclear or Conjugal Family) का निरंतर विस्तार हो रहा है।

निरंतर औद्योगिक विकास ने मानव के सामने भौतिक सुख-सुविधाओं को भोगने के अनेक विकल्पों को रख दिया है। मानव ने एक तरह से प्रकृति पर विजय पा ली है। विद्युत-ऊर्जा के विकास से कृषि के क्षेत्र में भी क्रांतिकारी परिवर्तन आया है। अकाल एवं महामारियों की समाप्ति से मृत्यु-दर में बहुत कमी आयी है। आज समाज में भौतिकवाद के विकास ने नकद-पैसे के सम्बन्ध को प्रमुखता प्रदान की है।

सामाजिक गतिशीलता में भी मुख्य भूमिका प्रौद्योगिक विकास ने निभाई है। आज पूरा विश्व एक गाँव जैसा मालूम पड़ता है। विशेषीकरण (Specialization) एवं श्रम विभाजन (Division of Labour) प्रक्रिया ने परस्पर निर्भरता (Mutual Dependence) एवं व्यक्तिवाद (Individualism) को भी बढ़ावा दिया है। इससे आज लोगों के बीच द्वितीयक सम्बन्धों (Secondary Relationships) का विस्तार देखने को मिलता है।

(2) राजनीतिक व्यवस्था (Political Organization)— समय और परिस्थितियों में परिवर्तन के साथ-साथ राजनीतिक व्यवस्था में भी परिवर्तन आया है।

Scanned with CamScanner

राजनीतिक व्यवस्था एवं सामाजिक संरचना के बीच एक सीधा सम्बन्ध है। आदिम काल में सामाजिक जीवन में राजनीति की भूमिका नगण्य थी। जैसे-जैसे राजनीतिक संस्थाओं में परिवर्तन आया, वैसे-वैसे सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था में भी परिवर्तन आता गया। सरदार, मालिक, राजा (Chiefs, Lords, Kings) और राज्य के विकास ने समाज को सीधे ढंग से प्रभावित किया। चरवाहे युग में जब राज्य का विकास नहीं हुआ था तो उस समय कबीलों का सरदार एक-दूसरे समूहों से आपस में लड़ता रहता था और लड़ाई में हार-जीत के फलस्वरूप विजयी एवं पराजित समूहों में उसी के अनुरूप सामाजिक असमानता एवं स्तरण का निर्माण होता था। जैसा कि गम्पलोविक्च (Gumplowicz) ने बताया है कि विजेता वर्ग शासन में रहता था और हारा हुआ व्यक्ति दास की श्रेणी में होता था। कभी-कभी दोनों समूहों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान की प्रक्रिया भी चलती थी।

सामन्ती युग में सामन्तों एवं आम लोगों के बीच शोषण पर आधारित सम्बन्ध हुआ करता था। उस समय चूँकि राज्य का विकास नहीं हो पाया था, शासन जन-इच्छाओं के बदले सामन्तों की इच्छाओं से चलता था। सामन्तों की इच्छा ही कानून मानी जाती थी। लेकिन समय के साथ उस व्यवस्था में भी परिवर्तन आया। राज्य और प्रजातंत्र का विकास साथ-साथ हुआ।

परम्परागत संभ्रांत वर्ग (Traditional Elites) का प्रभाव समाज में गौण होने लगा। तानाशाही की प्रवृत्ति में कमी आयी, गुलामी और दास-प्रथा का अन्त हुआ। हर किसी को सरकार बनाने और बदलने का अधिकार मिला। दुनिया के विभिन्न देशों में राजनीतिक क्षेत्र में इतनी क्रांतियाँ आयीं कि राज्य का शासन जन-इच्छाओं से चलने लगा। राजनीतिक परिवर्तन से विभिन्न प्रकार की सामाजिक चेतना, आन्दोलनों एवं क्रांतियों का जन्म हुआ। आदिम और आधुनिक समाज में फर्क का आधार आर्थिक ही नहीं, बल्कि राजनीतिक भी है। इसमें कोई शक नहीं कि राजनीतिक विचारों से भारी सामाजिक परिवर्तन आता है। मार्क्स और लेनिन के राजनीतिक विचारों ने समस्त विश्व को इस तरह से झकझोर दिया कि वे इतिहास पुरुष कहलाए। उसी तरह से भारत में गाँधी, टर्की में मुस्तफा केमाल और दक्षिण अफ्रिका में नेल्सन मण्डेला ने अपने देश के राजनीतिक जीवन में इतना उथल-पुथल मचाया कि विभिन्न किस्म के सामाजिक परिवर्तनों का एक ताँता-सा लग गया।

**3. सांस्कृतिक कारक (Cultural Factor)–** मार्क्स ने बताया है कि सामाजिक परिवर्तन का सबसे अहम कारक आर्थिक है। सामाजिक संरचना और संस्कृति को उन्होंने अधिरचना/आश्रित संरचना (Super-structure) माना। दूसरी तरफ कुछ ऐसे भी विचारक हुए जिन्होंने यह प्रमाणित किया कि सांस्कृतिक मूल्यों में परिवर्तन से सिर्फ समाज एवं संस्कृति में ही नहीं बल्कि अर्थ व्यवस्था में भी परिवर्तन होता है। वैसे विचारकों में मैक्स वेबर का नाम सबसे आगे है। उन्होंने अपनी पुस्तक **The Protestant Ethic and the Spirit of Capitalism,** 1958 में यह साबित कर दिया कि पाश्चात्य देशों में पूँजीवादी अर्थ व्यवस्था के विकास में प्रोटेस्टेंट आचार संहिता (Protestant Ethics)

Scanned with CamScanner

की बहुत बड़ी भूमिका रही है। मैक्स वेबर ने दुनिया के 6 बड़े धर्मों का अध्ययन किया, वे हैं– हिन्दू, बौद्ध, ईसाई, इस्लाम, कन्फूशियस तथा यहूदी। उन्होंने बताया कि सामाजिक घटनाओं, सामाजिक जीवन या सामाजिक संगठन या आर्थिक व्यवस्था के निर्धारण में धर्म की भूमिका सबसे अधिक रही है।

चूँकि विज्ञान भी संस्कृति के दायरे में ही आता है, इसलिए हम कह सकते हैं कि संस्कृति के विकास ने मानव के इतिहास में अभूतपूर्व परिवर्तन लाया है। आज भौतिक वातावरण में जो परिवर्तन आया है, उस परिवर्तन के पीछे विज्ञान की तरक्की है। चूँकि विज्ञान के द्वारा समाज में सबसे अधिक परिवर्तन आया है, इसलिए वर्तमान युग को आधुनिक या वैज्ञानिक युग भी कहा जाता है। विज्ञान के विकास ने मनुष्य के स्वभाव को बहुत आलोचनात्मक (Critical) और खोजी (Innovative) बना दिया है जिसके चलते हमारे धार्मिक विश्वासों, व्यक्तिगत विश्वासों, विचारों, जीवन के उद्देश्यों में काफी परिवर्तन आया है और इस परिवर्तन से पूरी सामाजिक संरचना, मूल्यों एवं प्रतिमानों में परिवर्तन आया है। आधुनिक समाज में परिवर्तन की गति तेज होने का एक ही कारण है कि विज्ञान में परिवर्तन बहुत तेजी से आ रहा है। दूसरे शब्दों में, ज्ञान और विज्ञान के विकास ने सामाजिक परिवर्तन की गति को अबतक के मानव के इतिहास में सबसे अधिक तीव्र कर दिया है। परिवर्तन के सांस्कृतिक कारक के सम्बन्ध में मैक्स वेबर का यह भी विचार उल्लेखनीय है कि विज्ञान के विकास से प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में काफी परिवर्तन आया है। जिसके माध्यम से सामाजिक, आर्थिक एवं नौकरशाही की व्यवस्था में भारी परिवर्तन आया है। परिवर्तन के इन कारकों के लिए उन्होंने एक नये शब्द का प्रयोग किया जो बुद्धिसंगत व्याख्या (Rationalization) के नाम से जाना जाता है। बुद्धिवादी प्रक्रिया ने हमारे दार्शनिक (Philosophical), सैद्धान्तिक (Ideological) एवं धार्मिक (Religious) विचारों में बहुत ही उल्लेखनीय परिवर्तन लाया है। संक्षेप में, मैक्स वेबर का मानना है कि सामाजिक परिवर्तन का मुख्य कारण बुद्धिवादी प्रक्रिया ही है।

परिवर्तन के सांस्कृतिक कारकों के सम्बन्ध में मानवशास्त्रियों का विचार भी काफी महत्वपूर्ण है। सामान्यतौर पर सभी मानवशास्त्री यह मानते हैं कि सांस्कृतिक प्रसार (Cultural Diffusion) एवं परसंस्कृति-ग्रहण (Acculturation) की प्रक्रिया से भी समाज में परिवर्तन आता है। इस सन्दर्भ में एम० एन० श्रीनिवास का पश्चिमीकरण की अवधारणा विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उन्होंने बताया कि भारतीय समाज में होनेवाले परिवर्तनों के पीछे पश्चिमीकरण की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रही है। अंग्रेजी शासन की स्थापना से हमारी चिन्तनशैली, वैचारिक दृष्टिकोण, राजनीतिक एवं आर्थिक व्यवस्था, खान-पान के तरीके, जाति-व्यवस्था, शिक्षण पद्धति इत्यादि में काफी परिवर्तन आए हैं। इन प्रक्रियाओं को मानवशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में हम सांस्कृतिक प्रसार एवं संस्कृति-संक्रमण की प्रक्रिया मानते हैं। यातायात, संचार के माध्यमों एवं शिक्षा के विकास से विश्व स्तर पर संस्कृति-संक्रमण की प्रक्रिया तेज हुई है। प्रौद्योगिक विकास ने सामाजिक परिवर्तन के सांस्कृतिक कारकों के लिए एक उत्प्रेरक अभिकर्ता (Catalytic Agent) के रूप में कार्य किया है।

Scanned with CamScanner